ब्रेन इंटरनेशनल स्कूल

विषय - हिंदी **कक्षा - ग्यारह** **अभ्यास पत्र दिसंबर 2024-25**

अपठित बोध व रचनात्मक लेखन (पुनरावृत्ति)

प्रश्न 1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं। इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्म-संस्कार के लिए थोड़ी-बहुत मानसिक स्वतंत्रता परमावश्यक है-चाहे उस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता से ही उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्म-निर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है। युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है, अपने ही आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे, ये बातें आत्म-मर्यादा के लिए आवश्यक हैं। यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है-हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे भोग, हमारे घर और बाहर की दशा, हमारे बहुत-से अवगुण और थोड़े गुण-सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है, जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है, जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मंद हो जाती है; जिसके कारण आगे बढ़ने के समय भी वह पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चट-पट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा उसके अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर ले जाए। सच्ची आत्मा वही है, जो प्रत्येक दशा में, प्रत्येक स्थिति के बीच अपनी राह आप निकालती है।

(1) विनम्रता के अभाव में स्वतंत्रता का महत्त्व .....

क) बढ़ जाता है | ख) घट जाता है |

ग) लोकप्रिय हो जाता है | घ) उद्देश्यपूर्ण हो जाता है |

(2) गलत कथन चुनिए - व्यक्ति में विनम्रता न होने पर

क) वह अपनी स्वतंत्रता का सदुपयोग करता है |

ख) वह अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करता है |

ग) वह स्वयं को ऊँचा समझने लगता है |

घ) वह दूसरों की स्वतंत्रता का हनन करने लगता है |

(3) हमें अपनी आत्मा को ..... रखना चाहिए |

क) उग्र ख) अशांत ग) नम्र घ) शांतिप्रिय

(4) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए |

(5) आत्म-मर्यादा के लिए कौन-कौन सी बातें आवश्यक हैं तथा दब्बूपन से व्यक्तितत्व किस तरह प्रभावित होता है ?

(6) आत्मा को कैसा बनाकर रखना चाहिए और यह भी बताइए कि ऐसा कौन-कौन आवश्यक मानते हैं ?

(7) गद्यांश में युवाओं को किस वास्तविकता से परिचित करवाया गया है तथा मर्यादापूर्वक जीवन जीने के लिए आत्मनिर्भरता क्यों आवश्यक है?

प्रश्न 2 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

पाकर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा,
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा ?
मेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है,,
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है,
फिर अंत समय तूही इसे अचल देख अपनाएगी।
हे मातृभूमि ! यह अंत में तुझमें ही मिल जाएगी।

(1) मातृभूमि से हमें क्या मिला है ?

क) खाने के लिए भोजन

ख) शरीर की रचना के लिए जरूरी पदार्थ

ग) हवा और पानी

घ) उपरोक्त सभी

(2) 'तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है' में कौन-सा अलंकार है ?

क) उपमा अलंकार ख) अनुप्रास अलंकार

ग) अतिश्योक्ति अलंकार घ) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

(3) मातृभूमि से हमारा संबंध कब तक रहता है ?

क) बाल्यावस्था तक ख) किशोरावस्था तक

ग) वृद्धावस्था तक घ) मृत्युपर्यंत तक

(4) काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए |

(5) यह काव्यांश किसे संबोधित है तथा शरीर निर्माण में इसका क्या योगदान है ?

(6) 'प्रत्युपकार' किसे कहते हैं तथा देश का प्रत्युपकार क्यों नहीं हो सकता ?

प्रश्न 3 'अचानक मेरा पैर फिसल गया और .....' वाक्य पूरा करते हुए लगभग 120 शब्दों में दृश्य लेखन कीजिए |

प्रश्न 4 खाद्य संभरण अधिकारी को पत्र लिखिए जिसमें राशन की सरकारी दुकान पर कम राशन दिए जाने की शिकायत की गई हो ।